आर्य और दस्यु

(गुरुकुलाचार्य श्री रामदेव जी द्वारा दशम
सरस्वती सम्मेलन में पढ़ा गया)

सम्वत् १९७४ वि० {दयानन्दाब्द ३५} सन् १९१८ ई०

५०० प्रति [तिथि १६ चैत्र] मूल्य ≈)॥

गुरुकुल-यन्त्रालय कांगड़ी में नन्दलाल के प्रबन्ध से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

प्रस्तावना

लाहौर आर्य्य-समाज के गत वार्षिकोत्सव पर मैंने "आर्य और दस्यु" विषय पर एक व्याख्यान दिया था। जब साहित्य परिषद् की कार्यकारिणी के सामने यह विचार उपस्थित हुआ कि आगामी सरस्वती सम्मेलन में किस २ का निबन्ध हो, तब मैंने कहा कि निबन्ध के लिए सामग्री तो मैं दे सकता हूं, यदि निबन्ध लिखने का भार कोई अन्य उठाने को तय्यार हो।

इस पर परिषद् के मन्त्री ब्र० देवराज ने, मेरी संगृहीत सामग्री के आधार पर निबन्ध लिखना स्वीकार किया। अब ब्र० देवराज द्वारा लिखा गया यह निबन्ध पाठकों के सामने उपस्थित है।

गुरुकुल भूमि
१५-१२-७४

रामदेव

ओ३म्

आर्य्य और दस्यु

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया
शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्तान्ते
सधमादेषु चाकन्। ऋ० १-५१,८

जहाँ एक ओर भारतवर्ष स्वराज्य के नाद से गूंज रहा है, और भारतीयों को एक जातीयता के सूत्र में बांधने का यत्न होरहा है, वहाँ दूसरी ओर भारत के दक्षिणीय कोने से स्वराज्य की मांग के विरुद्ध प्रबल शब्द उठता सुनाई देता है। कहा जाता है कि अगर भारतीयों को स्वराज्य मिल गया तो भारत की उच्च जातियें, ब्राह्मण जाति वा आर्यजातियों के लोग जो संख्या और शक्ति में अधिक हैं- अब्राह्मण (Non Brahmans) और अनार्य जातियों पर अत्याचार करेंगे, जैसा कि चिरकाल से करते आए हैं। आर्यों का अनार्य द्राविड़ जातियां से शाश्वतिक और पुराना विरोध है। आर्य और अनार्य जाति में मौलिक वा रक्त का भेद है, रक्त भेद के साथ एक दूसरे के प्रति घृणा का भाव भी बहुत देर से चला आया है। वैदिक काल से आर्यों और दस्युओं में लड़ाई चली आई है आदि।

इस प्रकार स्वराज्य की मांग के विरोध का आधार रक्त भेद को बनाया जा रहा है। यह रक्त भेद कहां तक ठीक है जिसको आधार बना कर इतना शोर मचाया जाता है, कहीं यह निस्सार वा मिथ्या तो नहीं ?

राजनीतिक दृष्टि को यदि छोड़ भी दें, फिर भी सत्य की जिज्ञासा से प्रेरित होकर, सत्य की खोज के लिए, इस विषय पर विचार करना चाहिए।

इस लेख में यह दिखाने का यत्न किया गया है कि आर्य और अनार्यों का यह विभाग जातीय भेद वा रक्त भेद के कारण नहीं प्रत्युत धर्म वा आचार की भिन्नता के कारण है। दस्यु आर्यों में से ही थे जो धर्म कर्म न करने से वा आचार हीन होने से पतित और बहिष्कृत समझे गये थे।

म्योर, मैक्समूलर, रौथ प्रभृति पाश्चात्य विद्वानों का विचार है कि भारत के आदिम निवासी दो पृथक् जातियों के थे। भारत में निवास करने वाली जनता का प्रबल और बड़ा भाग आर्यन नसल का है और विन्ध्य के उत्तर तथा अन्य समतल इलाकों में यह रहते हैं; इनके सिवाय एक अन्य नसल के लोग भी भारत में पाए जाते हैं जो कि प्रथम की अपेक्षा संख्या और शक्ति में कम हैं और विन्ध्य के दक्षिण तथा पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। पाश्चात्यों के अनुसार इन लोगों को वेद में दस्यु कहा गया है।

आर्य लोग भारत के प्रथम निवासी नहीं, प्रत्युत बाहर से भारत में आए हैं, इनके आगमन से पूर्व भी भारत में कोई लोग बसा करते थे वही आदिम निवासी हैं।

आर्य लोग भारत में कहां से आए ? इस प्रश्न का उत्तर एक अन्य गहन प्रश्न से सम्बद्ध है कि आदि सृष्टि कहां हुई ? आदि सृष्टि कहां हुई, इस विषय में बहुत मतभेद है जितने मुख उतनी बातें सुनाई जाती हैं। युरोप के प्रायः सभी देश, उत्तरीय ध्रुव, मध्य एशिया और तिब्बत भिन्न२ विचारकों के मतानुसार मनुष्यसृष्टि वा मनुष्योत्पत्ति के आदि स्थान कहे जाते हैं।

आदि सृष्टि कहां हुई यह स्वयं पृथक् बड़ा जटिल और विवादास्पद विषय है अतः इसको यहीं छोड़ विषय पर आते हैं।

म्योर साहब के कथनानुसार आर्यलोग मध्य एशिया से चले और उन्होंने काबुल के रास्ते आकर सिन्धु नदी को पार कर पंजाब में प्रवेश किया। पंजाब में इन नवागतों का वहां के प्राचीन वासियों से सामना हुआ, सभ्यता में उच्च और संख्या में अधिक इन नवागतों ने आदिम वासियों को हराकर खदेड़ना शुरू किया, खदेड़ते २ नवागतों ने क्रमशः पुरातनों को पंजाब से बाहर निकाल दिया, और पुनः गङ्गा यमुना के इलाकों को भी जीतकर पुरातनों को पहाड़ों में और दक्षिण में भगा दिया।

नवागतों और पुरातनवासियों में युद्ध होते रहे। इन नवागतों ने अपनी जाति वालों को 'आर्य्य' और अपने शत्रुओं वा प्रतिद्वन्द्वियों को 'दस्यु' नाम दिया।

जहां दस्यु आर्यों से जाति में भिन्न थे, वहां रंग, भाषा, धर्म, रीति रिवाज में भी भिन्न थे। आर्यों का रंग सफ़ेद या गोरा था और दस्युओं का काला।

आर्य और दस्यु एक दूसरे के धर्म, रीतिरिवाज को घृणा से देखते थे और दस्यु लोग आर्यों के धर्म कर्म में विघ्न डालते थे।

आर्य्य और दस्यु विषयक इन परिणामों की पुष्टि में म्योर साहब बहुत से वेदमन्त्रों, ब्राह्मण वाक्यों, मनु और महाभारत के श्लोकों को प्रमाणरूप से उपस्थित करते हैं।

१—वेद

(क) आर्य और दस्यु भिन्न जाति के थे—

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद् व्रतान् ॥ ऋ० १-५१-८

अयमेमि विचाकशद् विचिन्वन् दासमार्यम् ॥ ऋ० १०-८६-१६

म्योर के अनु० प्रथम मन्त्र का अर्थ है—आर्य और दस्युओं में भेद जानो, अव्रतों, धार्मिक क्रिया न करने वालों को दण्ड दो और आर्य के अधीन करो।

द्वितीय मन्त्रार्थ—इन्द्र कहता है कि यह मैं आता हूं दास और आर्य को देखता हुआ और उन में भेद करता हुआ।

(ख) दो प्रकार के शत्रु आर्य और दस्यु

त्वं तान् इन्द्रोभयां अमित्रान्दासा वृत्राण्या र्याचशूर । वधी—ऋ० ६-३३-३

(अर्थ)—हे वीर इन्द्र, तू हमारे दोनों शत्रुओं का नाशकर जो आर्य हैं और जो दस्यु।

दासा च वृत्रा हतमार्याणिच—॥ऋ० ७ ८३·१

(ग) दस्युओं के नाश के लिये विशेष रूप से प्रार्थना—

स जातुभर्मा श्रद्दधान ओजः पुरो विभिन्दन्न । चरद्विदासी ॥

विद्वान् वज्रिन् दस्यवे हेति मस्यार्य सहो वर्धय द्युम्न मिन्द्र ॥ ऋ १-१०३ ३

(अर्थ)—विद्युत् का अस्त्र धारण किये हुए और अपनी शक्ति में विश्वास रखता हुआ इन्द्र असुरों के दुर्गों का नाश करता हुआ विचरता करता है। हे वज्री इन्द्र विचार पूर्वक दस्यु की तरफ अस्त्र फेंक और आर्य की शक्ति और यश को बढ़ा।

धमम्.... । अभि दस्युं बकुरेणा धमन्ता उरु ज्योति श्चक्रथु रार्याय ॥ ऋ० १-११७-२१

हे अश्विनो दस्यु का वज्रद्वारा दाहकर के तुमने आर्य के लिये बहुत प्रकाश वा सुख कर दिया है।

(घ) इन्द्र का दस्युओं से भूमि छीन आर्यों को देना

दस्यूञ्छिम्यूंश्च पुरुहूत एवैर्हत्वा पृथिव्यां शर्वानि बर्हीत्।

सनत्क्षेत्रं सखिभिः श्वित्न्येभिः सनत्सूर्यं सनदपः सुवज्रः॥ ऋ० १ १००-१८

(अर्थ) हे पुरुहूत, बहुत बार बुलाये गये इन्द्र, अपने स्वभावानुसार दस्युओं और शिम्युओं को पृथिवी पर पटक कर वज्रद्वारा कुचल डालो। उत्तम वज्र धारण करने वाले इन्द्र ने, तेजस्वी मित्रों के साथ, क्षेत्र दिया, सूर्य दिया और जल दिया।

(ङ) आर्य और दस्यु में रंग भेद—कृष्णत्वचा वाले दस्यु

इन्द्रः समत्सु यजमान मार्यं प्रावद्विश्वेषु शतमूति राजिषु स्वर्मीळ्हेषु आजिषु। मनवे शासद् व्रतान् त्वचं कृष्णमरन्धयत्॥ ऋ० १-१३० ८

(अर्थ) सैकड़ों प्रकार से सब युद्धों में रक्षा करने वाले, इन्द्र ने स्वर्ग देने वाले युद्धों में यजमान आर्य की रक्षा की।

अव्रतों को दण्ड देते हुए उसने कृष्णात्वचा [वालों] को मनु के अधीन किया।

ससानात्यां उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम्
हिरण्य मुत भोगं ससान हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्ण
मवत् ॥ ऋ० ३ ३३ ९

(अर्थ) इन्द्रने घोड़े दिये, सूर्य दिया, बहुत पुष्टि करने वाली गौ दी, हिरण्य सम्पत्ति दी दस्युओं का नाश कर आर्यवर्ण (रंग) की रक्षा की।

इसी प्रकार ऋ० ९-७३ ९ में ·········अपघ्नन्ति···त्वच मसिक्नीम्' आया है। अर्थ हुआ काली त्वचा को जलाते हैं।

[च] धर्म रीति रिवाज में भेद—

विजानीहि० शासद् व्रतान् ॥

सूर्यं दिवि रोहयन्तः सुदानव आर्याव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि ॥ ऋ० १०-६५-११

पूर्वोक्त मन्त्रोक्त देवताओं ने सूर्य को आकाश में चढ़ाया और पृथिवी पर आर्यों के व्रतों को फैलाया।

शासस्त मिन्द्र मर्त्य मयज्युं शवसस्पते। ऋ० १-१-३१४

हे इन्द्र तुमने यज्ञ न करने वाले मनुष्यों को दण्ड दिया।

[छ] भाषा भेद—'मृध्रवाचः दस्यवः'

दनो विश इन्द्र मृध्रवाचः सप्त यत्पुरः शर्म शारदी दर्त्। ऋ० १ १७४ २

हे सुखकारक इन्द्र, तुमने शरद ऋतु सम्बन्धी सात किलों का नाश कर बिगड़ी जबान वालों को दबाया।

वेद में आए दस्यु असुर, यातुधान आदि शब्दों से आदिम निवासियों का ही अभिप्राय है यद्यपि कई जगह टीकाकार इन शब्दों का अर्थ अमानुषी आकृति वाले भूत प्रेतादि करते हैं।

२—दस्युओं की कई जातियों का वर्णन ऐतरेय, मनु और महाभारत में आता है। यथा ऐतरेय ब्रा० ७ १८

तानन्तु व्याजहार अन्तान् वः प्रजाभक्षीष्टेति त एते ध्रांपुं.ाः शबरा पुलिंदा मूतिबा इति उदंत्याबह वो भवान्ति, वैश्वा मित्रा दस्यूनां भूयिष्ठाः।

अर्थात् -विश्वामित्र अपने ५० आज्ञा भंग करने वाले पुत्रों को कहता है कि तुम्हारी सन्तति सीमाप्रान्तों का भोग करे यह सन्तति अन्तआ सीमा भाग में रहने वाले अंध्र, पुंड्र, शबर, पुलिंद, मूतिब, आदि तथा अन्य बहुतसी सीमाप्रान्त निवासिनी जातियें हैं। (Other numerous frontier tribes) बहुत से दस्यु लोग विश्वामित्र की सन्तान हैं।

३ मुखबाहूरुपज्जानां या लोके जातयो बहिः।
म्लेच्छ वाचा चार्यवाचा सर्वते दस्यवः स्मृताः॥
मनुः १०,४५

विराट् के मुख बाहु उरु और पांओं से उत्पन्न चार वर्णों से बाहर जो जातियें हैं, वह सब दस्यु जातियें हैं। चाहे वह म्लेच्छ भाषा बोलें चाहे आर्यों की भाषा।

४ पौरवं युधिनिर्जित्य दस्यून् पर्वतवासिनः
गणान् उत्सव संकेतान् अजयत्सप्त पाण्डवः।
२ २६-१० २५

पौरव को युद्ध में जीत कर पांडव ने उत्सव संकेतादि सात पहाड़ी दस्यु जातियों को जीता।

दरदान् सह काम्बोजै रजयत्पाकशासनिः
प्रागुत्तरं दिशं ये च वसन्त्याश्रित्य दस्यवः॥
निवसन्ति वने येच तान् सर्वान् अजयत्प्रभुः
लोहान् परमकाम्बोजान् ऋषीकानुत्तरानपि ॥
काम्बोजानां सहस्रैश्च शकाना ञ्च विशांपते।
शवराणां किरातानां बर्बराणां तथैवच ॥
अगम्य रूपां पृथिवीं मांस शोणित कर्दमाम्।
कृतवां स्तत्रसैनेयः सपथं स्तावकं वलम् ॥
दस्यूनां सशिरस्त्राणैः शिरोभिर्लून मूर्धजैः।
दीर्घ कूर्चै र्महीकीर्णा विबर्हैं रण्डजै रिव ॥
द्रोण ११६

इन श्लोकों में दरद, काम्बोज, लौह, ऋषीक शक, शबर, किरात, बर्बर आदि दस्यु जातियों का नाम है जिन्हें अर्जुन ने जीता था साथ ही उन जातियों के निवासस्थान की ओर भी निर्देश है।

इस प्रकार हमने देखा कि वेद में आर्य और दस्यु में स्पष्ट रूप से भेद करना, इन्द्र का दस्युओं की सम्पत्ति भूमियें छीन आर्यों को देना, आर्यों की रक्षा करना, दस्युओं को मारना, उनके पुरों को नष्ट करना, आर्य शत्रुओं और दस्यु शत्रुओं से रक्षा की प्रार्थना; पुनः इन्द्र का कृष्णत्वक् 'अनृत' और 'मृध्रवाक्' को मारना; यह सब मिलकर हमको इस परिणाम पर पहुंचाते हैं कि आर्य और दस्यु भिन्न और प्रतिद्वन्द्वी जातियों के थे, उनमें मौलिक या रक्त भेद होगा; संज्ञायें केवल धार्मिक भेद को नहीं बतातीं। ऐतरेय मनु और महाभारत से तो यह बात और भी पुष्ट हो जाती है वहां तो स्पष्ट ही दस्युओं की जातियों का होना लिखा है, जातियों के नाम और निवास स्थान भी दिए हैं। सारांश यह कि आर्य्य और दस्यु यह विभाग जातीय और रक्त भेद के कारण होगा न कि धार्मिक भेद के कारण।

यह ठीक है कि पिछले समय में पतित आर्य भी दस्यु कहाए जाने लगे, काम्बोज प्रभृति दस्यु जातियें आर्यों की ही सन्तान थीं। परन्तु वेद में ऐसा नहीं, क्योंकि उस

समय ब्राह्मणोक्त याज्ञिक क्रियाएं (Brahmanical Institutions) पूर्णता को प्राप्त न हुई थीं, अतः कौन ब्राह्मणोक्त क्रियाओं को ठीक ठीक (Strictly) करते हैं (अतः आर्य हों) और कौन पालन में ढील करते हैं (अतः दस्यु हों) यह विवेक नहीं हो सकता था, इस लिए वेद में कहे गये धर्म में भिन्न लोग आर्यों से भिन्न जाति के होंगे।

उत्तर पक्ष

इस प्रकार आपके सामने पक्षपोषक प्रबल युक्तिएं देते हुए पूर्वपक्ष रख दिया है; अब उत्तर पक्ष पर आते हैं।

जैसा कि पहले लिखा गया, आर्य लोग भारत में बाहर से आए या नहीं यह विवादास्पद है। दोनों पक्षों की पुष्टि में प्रमाण उपस्थित किये जा सकते हैं। पूने के नारायण भवन रावपावगी ने अपने ग्रन्थ The Aryavartic Home And Its Arctic Colonies में पाश्चात्य विद्वानों की युक्तियों और प्रमाणों की समीक्षा कर सिद्ध किया है कि भारतीय आर्य बाहर से नहीं आए प्रत्युत आदि सृष्टि सप्त सिन्धु प्रदेश में सरस्वती नदी के किनारे हुई।

यदि यह मान भी लें आदि सृष्टि बाहर हुई, कि आर्य लोग भारत में कहीं बाहर से आए, फिर भी इसमें कोई प्रबल युक्ति नहीं कि उनके आगमन से पूर्व भारत में कोई जंगली जाति रहती थी, जिसे आर्यों ने "दस्यु" नाम दिया और हराकर दक्षिण और पहाड़ों में भगा दिया।

अस्तु अब म्योर साहब के दिए प्रमाणों और युक्तियों की परीक्षा कर उनकी निस्सारता दिखाते हुए यह स्थापित किया जाएगा कि आर्य और दस्यु पृथक् जातियों के न थे, दस्यु आर्यों में से ही थे जो धर्म कर्म न करने से, आचार भ्रष्ट होने से, बहिष्कृत और पतित समझे गये थे। दोनों शब्दों की व्युत्पत्तियें इसी की पुष्टि करती हैं, वेद और उत्तरकालीन वैदिक और संस्कृत साहित्य इसी बात को पुष्ट करता है, पारसियों की ज़िन्दावस्था की भी इसमें साक्षी है। साथ ही यह भी दिखाऊंगा कि पाश्चात्यों को स्वयं भी अपने पक्ष की सत्यता में सन्देह है।

[१] आर्य्य और दस्यु शब्द का अर्थ निरुक्त और सायण के अनुसार—

[निरुक्त] **आर्य ईश्वर पुत्रः** [६–२६] (Arya is the son of Lord)

दस्युः दस्यतेः क्षयार्थादुपदस्यन्त्यस्मिन्रसा, उपदासयति कर्माणि ॥ [नि० ७ २३]

दस्यु क्षयार्थक दस् धातु से बनता है, दस्यु में रस क्षय जाते हैं [अतः मेघ दस्यु है], और वह वैदिक कर्मों का नाश करता है, (He destroys religious ceremonies)

[सायण] **आर्यम्=अरणीयं सर्वैर्गन्तव्यम्** । ऋ० १,१३०,४

आर्यान् विदुषोऽनुष्ठातॄन् ॥ ऋ० १-५१-८

उत्तमं वर्णं त्रैवर्णिकम् ॥ ३-३४-९

आर्याय यज्ञादि कर्म कृते यजमानाय ॥ ६-२५-२

आर्याणि कर्मानुष्ठातृत्वेन श्रेष्ठाणि ॥ ६-३३ ३

दस्यु=

दस्युं चोरं वृत्रं वा ॥ ऋ० १-३३-४

दस्यवः अनुष्ठातृणामुपक्षयितारः शत्रवः॥ऋ०१ ५१ ८

दासीः कर्मणामुपक्षयित्री र्विश्वाः सर्वा विशः प्रजाः ६-२५ २

दासाः कर्म हीनाः शत्रवः ॥ ६-६०-६

दस्यवः अव्रताः ॥ १-५१-८

"दासं वर्णं शूद्रादिकम्"। "दस्यु मव्रतम्"

दासः कर्म करः शूद्रः, आर्यस्त्रै वर्णिकः ॥ १०-३८ ३

यास्क और सायण के किए अर्थों में आर्य्य और दस्यु के जातीयभेद होने की गन्ध भी नहीं। सभी जगह यज्ञादि कर्म करने वाले त्रैवर्णिक को 'आर्य्य' कहा है और यज्ञादि कर्म न करने वाले, विघ्न डालने वाले अव्रत, व शूद्रादि को 'दस्यु' और 'दास' नाम दिये हैं।

२—पाश्चात्य विद्वानों की साक्षी।

म्योर साहब जिन्होंने आर्य्य और दस्यु को जातीय भेद सिद्ध करने में बहुत प्रयत्न किया है, और जिनकी स्थापना के आधार पर निबन्ध का पूर्व पक्ष है, वेद में आए असुर और दस्यु शब्दों की पड़ताल कर इस परिणाम पर पहुंचे हैं—

"I have gone over the names of the Dasyus or Asuras mentioned in the Rig-Veda with theveiw of discovring whether any of them could be regarded as of non–Aryan or indigenous origin, but I have not observed any that appear to be of this character."

(Arya vartic Home P. 260)

अर्थात, ऋग्वेद में आए असुर और दस्युओं के नामों की मैंने इस दृष्टि से पड़ताल की कि क्या उनमें से किसी नाम का अनार्य और एतद्देशीय Indigenous मूल समझा जा सकता है, पर मुझे इस प्रकार का एक भी नाम नहीं मिला।

प्रो० मैक्समूलरः—

"Dasyu simply means enemy; for instance, when Indra is praised because he destroyed the Dasyu and protected the Arian colour.' The 'Dasyus,' in the Veda, may mean non—Arian races in many hymns; yet the mere fact of tribes being called the enemies of certain kings or priests can hardly be said to prove their barbarian origin. Vasishta himself, the very type of the Arian Brahman, when in feud with Vishwamitra, is called not only an enemy but a 'Yatudhana, and other names, which in common parlance are only bestowed on barbarian savages and evil spirits."

(Muir's Sanskrit texts vol II P. 389)

अभिप्राय यह है कि—

दस्यु का अर्थ केवल शत्रु है, जैसे कि उस वाक्य में है जहाँ इन्द्र की इस लिए प्रशंसा की है कि उसने दस्यु का

नाश कर आर्य्य वर्ण की रक्षा की थी। हो सकता है कि दस्यु का अर्थ बहुत से मन्त्रों में अनार्य लोग हो, फिर भी केवल इतनी बात से कि दस्यु जाति की किन्हीं राजाओं या पुरोहितों से लड़ाई थी वे बर्बर या अनार्य नस्ल के नहीं बन जाते। वसिष्ठ को, जो शुद्ध आर्य रक्त का ब्राह्मण है, विश्वामित्र से लड़ाई करते समय "यातुधान" कहा गया है।

प्रो० मैक्समूलर अन्यत्र एक जगह यातुधान और राक्षस के विषय में लिखते हैं—"They (the epithets) are too general to allow us the inference of any ethnological conclusions' (Arya, P. 291)

अर्थात् उक्त दोनों शब्द बहुत साधारण है और उनसे कोई मनुष्यजातीय भेद सम्बन्धी परिणाम नहीं निकल सकता।

प्रो० रौथ –

"It is but seldom, if at all, that the explanatian of Dasyu as referring to the non-Aryans, the barbarians, is advisable."

(P. 285)

यदि ऐसे स्थल हैं तो वह बहुत ही कम होंगे जहां दस्यु का अर्थ अनार्य या बर्बर किया जा सके।

Zenaide, A. Ragozin अपनी Vedic India P.113 लिखते है "Dasyu, meaning simply peoples"; "a meaning, which, the word, under the Iranian form Dahyu" retains, all

through the Avesta and the Akhaemenian in scriptions, while in India, it soon underwent peculiar changes." (Arya. Home P, 262)

दस्यु का अर्थ केवल है लोग और जाति, इरानी दस्यु शब्द का आज तक यही अर्थ है, अवस्था में भी इसी अर्थ में आया है यद्यपि भारत में शब्द के अर्थों में विचित्र परिवर्तन आते रहे।

म० नैस फील्ड "Brief view of the Caste system of the North-- Western provinces and oudh' में इस बात का बड़े ज़ोरदार शब्दों में खण्डन करते हैं कि भारतीयों में आर्य विजेता और अदिम निवासी ऐसे कोई विभाग है। और साथ यह कि आज कल के सिद्धान्तवाद ही देशवासियों को आर्य और प्रथम आदिम निवासियों में बांटते हैं (It is, the modern doctrine which divides the population of India into Aryan and aboriginal) आगे जा कर लिखते हैं भारतीय जातिमें स्पष्ट समता वा एकता है, ब्राह्मण जाति का रंग वा रक्त दूसरी जातियों का सा है भिन्न नहीं। (There is essential unity of the Indian race; 'the great majority of Brahmans are not of lighter complexion or of finer and better bred features than any other caste,' or 'distinct in race and blood from the scavengers who swept the roads.') P. 271

३—यह हमने देख लिया है कि आर्य और दस्यु शब्दों से यास्क और सायण क्या अभिप्राय समझते थे। साथ यह भी देख लिया कि पाश्चात्य विद्वान् भी मानते हैं कि आर्यों का विदेशी होना और दस्युओं का आदिम निवासी होना वेद से सिद्ध नहीं होता। अब उन के दिये हुए मन्त्रों की समीक्षा करते हैं।

(क) आर्य कौन हैं और दस्यु कौन? यह वेद से ही स्पष्ट हो जाता है।

विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रंधया

शासदव्रतान्।

शाकी भव यजमानस्य—॥ ऋ० १-५१-८

'बर्हिष्मते' शब्द का अर्थ है 'यज्ञनियुक्ताय' और 'अव्रतान्' का अर्थ है 'कर्मविरोधिनः'।

अब स्पष्ट होगया कि आर्य कौन है? जो यज्ञादि करने वाला है और दस्यु वह जो कि स्वयं यज्ञ कर्म न करता हुआ उस में विघ्न डालता है। इस में कहीं भी जाति भेद की गन्ध नहीं। इसी प्रकार निचले मन्त्रों में

अकर्मादस्युः········अन्यव्रतः—॥ ऋ० १०-२२-८

सहवांसोदस्युमव्रतम् —॥ ६-४१-२

(ख) क्या दस्यु काले रंग के थे? हमारा तो विचार

है कि 'कृष्णा,' 'कृष्ण गर्भाः' 'त्वच असिक्नीम्' 'कृष्णां त्वचम्' आदि में कृष्ण शब्द दस्युओं के प्रति घृणा और निन्दा का भाव दिखाने के लिए है। कृष्ण शब्द पाप का उपलक्षण है, श्रेष्ठ पुरुषों की पाप से घृणा स्वाभाविक ही है, उन्हीं पाप कर्मों के नाश से यहां अभिप्राय है। हमारे यहां उपनिषदों में दो प्रकार के कर्म कहे हैं शबल और श्याम या काले पाप कर्म, बस उन्हीं का वेद में भी वर्णन है। बस सारांश यह कि कृष्ण शब्द पाप और पापियों के लिए है न कि किन्हीं जंगली काले लोगों के लिये। इसी बात की पुष्टि वेद, ज़िन्दावस्था और लोकाचार से होती है।

यदि सारे मन्त्र को देखा जाय और पूर्वापर की संगति जोड़ी जाय तो कृष्ण शब्द का अर्थ स्वयं खुल जाता है, और मालूम हो जाता है कि यहां कृष्णत्वक् से किन लोगों से अभिप्राय है।

यथा—ऋग्वेद का मन्त्र है 'संदहन्तो अपव्रतान्। अपधमंति त्वचमसिक्नीम्" ॥ ऋ० ६·७३·५

इस मन्त्र में 'त्वचमसिक्नीम' उन्हीं लोगों के लिए है जिन्हें पूर्वार्ध में 'अपव्रत" कहा है।

इसी प्रकार अन्यत्र भी 'अपव्रत' ब्रह्मद्विट् 'अवृत'

'अकर्मा' लोगों के प्रति घृणा दिखाने के लिए कृष्ण शब्द का प्रयोग किया गया है।

ii गाथा उस्तवैती में ज़रतुश्त ने कहा है।

"That I will ask thee, tell me it right, thou living God who is the religious man and who the impious, after whom I wish to inquire ? With whom of the both is the **black spirit,** and with whom the bright one ? Is it not right to consider **the impious man** who attacks me or Thee, to be a **black one** ?" (Arya, *P.* 261)

हे चेतन परमात्मन्, यह मैं तुम से कहता हूं, मुझे ठीक २ बताओ कौन धार्मिक आदमी है और कौन अपवित्र, इसकी मुझे जिज्ञासा है ? दोनों में से किस में कृष्ण आत्मा है और किस में शुभ्र ? क्या अपवित्र, आदमी को जो मुझ पर या तुम पर आक्रमण करता है कृष्ण पुरुष समझना ठीक नहीं ?

इस उद्धरण से स्पष्ट होजाता है कि 'कृष्ण, शब्द पाप और पापी के लिये प्रयुक्त होता रहा है।

iii आज कल भी हम देखते हैं कि युरोपियन लोग अभिमान वश भारतीयों से घृणा करते हुए उन्हें काला आदमी (Blackman, Niggers) कहते हैं, (Pro. मैक्समूलर लिखते हैं The so called Niggers of India) और आफ्रीकादि

उपनिवेशों में भारतीयों पर तरह तरह की रुकावटें डालते हैं और अत्याचार करते हैं।

पर न यह ठीक है कि सभी युरोपियन भारतियों की अपेक्षा गोरे हैं और न यह कि सभी भारतीय युरोपियनों की अपेक्षा काले हैं। काश्मीर आदि पर्वत देश वासी लोग युरोपियनों की अपेक्षा अधिक गोरे और सुन्दर हैं। फिर भी प्रत्येक भारतीय को घृणा दिखाने के लिए काला आदमी कहा जाता है। इसी प्रकार यज्ञादि न करने व ले पतित लोगों को, दस्युओं को 'कृष्ण, कहा है।

IV ऋग्वेद (५–७०–३) का मन्त्र है।

तुर्याम दस्यूंस्तनूभि॰ ॥

इस का अर्थ राथ साहब ने किया है 'Let us over come the Dasyus in our own persons' अभिप्राय यह है कि हम उन दस्युओं पर जो हमारे अपने शरीर में हैं विजय प्राप्त करें।

क्या अपने शरीर का भी आधा हिस्सा दस्यु अतएव अनार्य नसल का और आधा आर्य हो सकता है? नहीं अतः अर्थ स्पष्ट है कि जो हमारे अपने शरीर में पापमय भाग है उस पर विजय प्राप्त करें। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए कि "दस्यु "कृष्ण" शब्द भी पापियों के प्रति घृणा दिखाने के लिए हैं।

प्रो० राथ मानते हैं कि "कृष्णगर्भाः, 'कृष्णयोनी, शब्द मेघ के लिए, और रात्रि के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

(ग) "मृध्रवाक्" शब्द से यह दिखाने का यत्न किया गया था कि दस्युओं की भाषा आर्यों से भिन्न थी और उसी के लिए यह शब्द है। पर शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ से ऐसा कोई परिणाम नहीं निकलता।

निरुक्त (६–३१) 'मृध्रवाच' का अर्थ करता है 'मृदुवाचः'।

सायणाचार्य 'मृध्रवाचः' का अर्थ "हिंसित वागिन्द्रियान्' 'हिंसितवचस्क म्' (७-६-३) "बाधवाचम्"।

॥५–२६-१० ॥

म्योर साहब स्वयं मानते हैं कि 'मृध्रवाच' शब्द दस्युओं की भाषा की ओर निर्देश करता नहीं प्रतीत होता।

'In any case, the sense of the word मृध्रवाच is too uncertain to admit of our referring it with confidence to any peculiarity in the speech of the aborigines

[*Muir's* Re. P, 378)

अभिप्राय यह कि 'मृध्रवाच' शब्द का भाव बहुत ही अस्पष्ट है और उस से आदिमवासियों की भाषा की विशेषता बताने वाला परिणाम किसी भी अवस्था में निश्चय पूर्वक नहीं निकाला जा सकता।

४—वैदिक साहित्य तथा संस्कृत साहित्य से तो यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि दस्यु आर्यों की सन्तान थे, जो वैदिक कर्म न करने से पतित और बहिष्कृत समझे गये थे; पाश्चात्य विद्वान् भी इस को मानते हैं। दस्यु जातियों में से बहुतसी क्षत्रिय जातियें थीं। ऐतरेय मनु, रामायण और महाभारत इस में साक्षी हैं—

तस्य ह विश्वामित्र स्यैकशतं पुत्रा आसुः, पंचाशदेव ज्यायांसो मधुच्छंदसः पंचाशत्कनीयांसः, तद्ये ज्यायांसो न ते कुशलं मेनिरे। ताननुव्याजहार अन्तान् वः प्रजा भक्षीष्टेति। त एते अंध्राः, पुंड्राः, शवराः पुलिन्दा मूतिबा इत्युदन्त्या बहवो भवन्ति। वैश्वामित्रा दस्यूनां भूयिष्ठाः॥ ऐ ब्रा ७-१८

(सायण) विश्वमित्र ऋषि के एक सौ पुत्र थे, मधुछंदस् प्रभृति पचास बड़े और पचास छोटे। जो बड़े थे उन्होंने कहना नहीं माना। विश्वामित्र ने उनको कहा कि तुम्हारी सन्तान चण्डालादि नीच जातियों की हो जाय। वही अंध्र, पुंड्र शवर, पुलिन्द, मूतिब, आदि जातियें हैं दस्यु जातियों में से बहुत सी विश्वामित्र की सन्तान हैं॥

(ख) क्षत्रिलोग दस्यु कैसे बन गये, इस विषय में मनु महाराज कहते हैं—

शनकै स्तुक्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणा दर्शनेन च॥ मनु १०-४३

पौण्ड्रकाश्चौड्र द्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदा पाह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥ ४४ ॥

मुख बाहूरु पज्जानां या लोके जातयो वहिः ।
म्लेच्छवाचाश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः ॥४५॥

पौण्ड्र आदि १२ क्षत्रिय जातियें वैदिक क्रियाएं भुला देने से, और ब्राह्मण लोगों से सम्बन्ध टूट जाने से शनैः शनैः शूद्र हो गयीं, और यही जातियें दस्यु हैं चाहे म्लेच्छ भाषा बोलें चाहे आर्यों की भाषा ।

इसपर प्रो० राथ कहते हैं "It is thus irrefragably proved that the Kambojas were originally not only an Indian people, but also a people possesed of Indian culture; and consequently, that in Yaska's time, this culture extended as for as the Hindukush. At a later period, as the well known passage in Manus' Institutes shows, the Kambojas were reckoned among the barbarians, because their customs differed from those of the Indians,"

(ग) महाभारत १२-१३६- १ "दस्यूनां निष्क्रियाणां च क्षत्रियो हन्तुं मर्हति ॥

तस्माद्प्यद्येहाददान मश्रद्दधान मयजमा नमाहु राशुरोवत इति । (छा० उ० अ० ८ ख. ८. ५)

महाभारत शान्तिपर्व अध्याय १६८ में भीष्म कहते हैं। हे राजन् मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूं जो उत्तर दिशा

में म्लेच्छों में हुई। मध्य देश का कोई ब्राह्मण किसी ब्राह्मण और वेदज्ञों से रहित पर समृद्ध ग्राम में भिक्षा लेने के लिए घुस गया। वहाँ एक धनी, धर्मात्मा, सच्चा, दानी वर्णव्यवस्था जानने वाला दस्यु रहता था। उसके घर पर जाकर ब्राह्मण ने भिक्षा मांगी। वह गौतम नामक ब्राह्मण म्लेच्छों में रहते रहते उनके सन्निकर्ष से उन जैसा बनगया। उसी ग्राम में एक और ब्राह्मण आनिकला, और पहले ब्राह्मण को देख कर कहने लगा कि तूतो मध्य देश का, कुलीन ब्राह्मण था पर उससे दस्यु कैसे बन गया।

इस कथा से स्पष्ट होजाता है कि दस्यु कोई पृथक् नसलके न थे आर्यों में से ही पतित लोग, या धार्मिक लोग भी जो पतितों के सङ्ग से पतित होजाते थे, दस्यु कहाने लगते थे।

(घ) एक और दृष्टान्त लीजिए, जिससे यह स्पष्ट होजायगा कि किस प्रकार ब्राह्मण माता पिता की सन्तान भ्रष्टाचार होने से राक्षस यातुधान कहाने लगती है। पुलस्त्य ब्रह्मर्षि थे, द्विज थे ('पुलस्त्यो नाम ब्रह्मर्षिः'; 'पुलस्त्यो यत्र स द्विजः') उनका पुत्र विश्रवा भी उन जैसा योग्य था। पर विश्रवा के पुत्रों में से ... कुम्भकर्ण भ्रष्टाचार, अधार्मिक होने से राक्षस, दस्यु अनार्य, यातुधान कहाने लगे, पर छोटा पुत्र विभीषण धर्मात्मा होने से आर्य ही रहा।

और भी और [अथो १८ १३] कैकयी को अनार्या कहा गया है। निश्चय है वह क्षत्रिय की कन्या और क्षत्रिय राजा की धर्मपत्नी थी, पर अनुचित व्यवहार के कारण उसे अनार्या कहा गया है।

(क) इसी प्रकार यदि दास वा दस्यु शब्द में अनार्यत्व की गन्ध होती तो हम ऐसे लोगों के जिनका आर्य रक्त का होना निश्चित है दास शब्दान्त नाम न पाते, पर मिलते हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण के कर्ता का नाम है महीदास। वह किसी ऋषि की पत्नी इतरा का पुत्र था।

हम लोग तो वेद में इतिहास नहीं मानते, पर पाश्चात्यों के मत में वेद ऐतिहासिक पुस्तक हैं। अब वेद में (ऋ० ७-१८-२५) 'सुदास' और "दिवोदास" शब्द आते हैं पाश्चात्य तथा सायणादि भाष्यकार उन्हें क्षत्रिय राजा समझते हैं।

इसी प्रकार "दस्यु" शब्दान्त नाम मिलता है जो किसी राजर्षि का था—

'स आयजन्त त्रसदस्युम्" ॥ ऋ० ६-४२-८
'अथा राजानं त्रसदस्युम्' ॥ ६ ४२-६

असदस्यु पर सायणाचार्य लिखते हैं (पुरुकुत्सस्य पुत्र त्रसदस्यु राजर्षिः)

'यदि दास और दस्यु शब्द में अनार्यत्व की गन्ध है तो भी तो वेद में इतिहास मानने वाले पाश्चात्यों के अनुसार क्षत्रिय आर्य राजाओं के सुदास दिवोदास और त्रसदस्यु नाम न होने चाहिये थे ।

यदि मानलें आर्य लोग कहीं बाहर से भारत आए थे और उन्होंने दस्युओं पर विजय पाकर देश कीज कर उनको भगा दिया था, जैसा कि पाश्चात्य कहते हैं तो एक बात हमारी समझ में नहीं आती यदि आर्य लोग विजेता होते तो उनको अपनी विजय छिपाने की क्या जरूरत थी ? विजय को कौन छिपाया करता है हार को भलाही छिपालें । एवं हम वैदिक साहित्य में इस प्रकार का कोई चिन्ह या निर्देश नहीं पाते जिससे आर्यों का बाहर से आना विजेता होना सिद्ध हो ।

अन्त में प्रो० रौथ— के इन शब्दों के साथ समाप्त करते हैं कि-"It is but seldom, if at all, that the explanation of Dasyu as reffering to the non-Aryans, the barbarians is advisable." (P. 285)